

क का काला इत्यावरुपया जय न ॥ व द ॥ श्रु ग न्मा व ला वा न हि कान वा ॥ वे शा ह क्का लान् ॥ रु ल मा म पृ ष्ठ
श्रु ल अ दि दा रु न स दा ॥ रा गी वि ल वि उं ग नां रु लं शु ष्ठं गु ल रु नं ॥ आ दि षा द्वा हि री न क पे न य का द व पि ॥
गान व द्म ना न् ॥ न् न ॥ स मा र्ज न म दा स्नान या श्रु नानि का ॥ व हि ॥ स मा र्ज न मा दा श्रु मा द व ग द्म न ॥ न्
न ॥ स मा र्ज न शो शं व रा स्नान कृ ति र्ज नं ॥ व हि ॥ स मा र्ज न से व प्र था क वा म ला पि रि ॥ कृ ष्ण ज्ञान क था ॥ गान क र
या न द रु ष ज ग स्या स्नान वि धान था ॥ ज्ञान क ॥ कृ ण ल ॥ स दा ॥ सान श्रु दि ना दा नां नि म्वा दा नां व र ॥ सृ नां
॥ रु ल श्रु दा दि मा दा नां प टा ला द र्द लं म नं ॥ ०० नि रु द णो न का न् ॥ क वि ग य नं क वि सु लं क वि लु ष्यं क वि
रु लं ॥ क वि ग त कं क वि ला र्कं क वि न न सं क वि र्ज लं ॥ क वि ला र्कं श्रु ना र्कं क वि क वि न ॥ न कं
क र्वा ष वा र्कं नं र्ज थ गं प्र था ज य न ॥ न् द सि द्ध न स स्य न ल दृ ग था ला रु स्य हा ॥ ग स म ॥ सं सि द्धा धि तं ल रु द
व र्क व ट का दा नां ग थ स फ म ॥ था दा थ ग रि षि ग्व ना य स न् ज्ञानि दि द्ध व न्च न् नि द हा ना य स र्वा फ थ नि

विधिः॥ विधिः कृत्या लोवद कमपि गुरु वासन पूजयित्वा तैलस्य श्रुत्य किं वाचयति नियमः संस्कृतः
निसंशयानां नानाविधपदशायादवधिजनकोऽरुनः शिवः स्यात्पुष्पं नृपि सुकमुदगं हिन
तसूरिना नियमितं विष्णुं च संस्मृत्य यमं विधिवदधयत्तु वासनोदनिमात्रकत्वे ४ काये ४ यथा हि
सदनं सुनरि ४ अथ नाथे ४ अथ कसुनाय नदन ४ अथ जलजलदसुदान कपाटान कर्तुं मञ्जि शाल ४
नृकायने नखे वदन ४ अथ कंकालमुखे ४ ॥ सानसं ग्रहान् ॥ अथ सरोषधीनां श्रुत्या लं यवनादिनां ॥ नः
यथा दोषकृतं सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४
काथ ४ काथं समामन ४ ॥ येन कान् ॥ उक्तं ॥ कलाश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ ॥ काथश्च गुरु
लं वा नि काथ ४ काथं समामन ४ ॥ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४
यदा गुरु ४ वलिना वलि वलन ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४

स्थापन तथा गन्धवल्लेन सादान् ॥ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४
यकं रुमा कृतमथ गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४
विचो न ४ ॥ कथा विधीयन्त्यां कलं च वलि वलन ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४
अथ कलं न ४ पयः ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४
आदमकं सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४
यत्तु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४
गन्धेनियं सिद्धिं गानेनानि नवन कान् ॥ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४
मिथ्या कामम ४ सर्व कर्मसु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४ अथ सरोषहान् काथश्च गुरु ४
यामनपदवनिषिना अथ विष्णुं च संस्मृत्य यमं विधिवदधयत्तु वासनोदनिमात्रकत्वे ४ काये ४ यथा हि

वनिद्वयमनस्यवयानयन। काथपाननवयस्मा। छिष्टमागयकारिणा। मशमावलिगायाका। विप्रस्मायक
नीयसी। कल्कचूर्णविलहानां। विप्रहं। छिष्टमागया। मशमंदिपहंविंश। कनीयमुपहंरुवन्। वमनवापिः
वगम४स्यनृक्षीपिरुक्तद्वयम४। पर्वगममशमावगमश्चत्तानमृपनामना४। वमनवविनंकवगथा। अलिगमा
कृष्ण। नृक्षययादगपहं। प्रमादुर्मलाविल४। करुंकरुकाक्षुषे४। पिरुंखाइहिमंजयन्। सखादहवलाभा
वृं संसृष्टंवायनाकरुं। कृष्णाणा० रुहंसिन्धुंकरुकाक्षुषे४। पिवन्। पटाहवासानिम्बेय। पिरुपीनजहं। पि
वन्। पेटेलेस। अश्वानसागसां। सक्षीनंमदनं। पिवन्। कलभनृलुनाहंन। स्पृशन्। वामयहिषका। नृजी।
काषूपानीयं। सिन्धुपीत्वावभनृसूवी४। वमनं। पाययित्वा। उजाने। मायासुनस्त्रिं। यसीकाद्वय४। को०४। कलुद
नृक्षनवयन्। नृनिवा। नरुवहं। हृष्टा। हिक्का। मोती। संविहना। अका। नि४। सपहंमकावाह। रुहंनसंरुनि४। न
कयुर्विष्टीवेनश्रुत। कलपी। गयु। वमनस्यानिर्गो। गयु। मृदक्यादिर्नवन्। वमनान्नपानि। स्थायां

[illegible]

[illegible]

पूनाषवागसमं कलुमलुलगा... विनाकानंमम... ४ अथ शाल

नात्मावानस ४४॥ न्यायनं हि नं ॥ १०० ॥ निष्ठाऽथ नान् ॥ १०१ ॥ वाजं सट्टकवलिमनिवयूतं ४५ ॥ वनकुलं याशं क
मृवजं समथिसहि नं मर्दिनं यामभकं १०२ ॥ कं उद्धादिमार्गं निनिनरुहयूतं त्यक्तं फट्टमृचे निष्कारुदा
नशायं पवत्तमलाहने ४६ ॥ सर्वनागे करुह ॥ सानसं यहात् ॥ जपाहने सुमे ४७ ॥ सुतायाषट् केन गन्धके ४८
नानाय ४९ ॥ दक्षामाषमाय ४९ ॥ सयि ४९ ॥ सिनयूत ४९ ॥ हनि संयहमानाहमा म ४९ ॥ लंनव कलं वहा कनं विल
कल ॥ गानलोम्निषवनात् ॥ १०० ॥ निनावावानस ४९ ॥ वसनं पुनीयात् ॥ १०० ॥ निथागननदि ॥ वि
नकविधिनामन ४९ ॥ ॥ अथ वस्त्रविधि ४९ ॥ वस्त्रिद्विधनवासाखा निनं रुच्येन ४९ ॥ पन ४९ ॥ य ४९ ॥ स्नेहदी
यनसखाहनवासननमक ४९ ॥ कषायदाननेलाया निनरु ४९ ॥ निगद्यनवस्त्रिद्विधयनयस्मा रुस्मा दस्त्रि
निनिस्त्रु ४९ ॥ मृगजङ्गकनगवां महिषस्य वारुवगु मूयका ४९ ॥ सुवस्त्रि ४९ ॥ लुदलाह नयमज ४९ ॥ नयं कार्य
वितर्मादि ४९ ॥ अमुद ४९ ॥ वट्टक ४९ ॥ ॥ नये ४९ ॥ पिपासा ४९ ॥ मलि ४९ ॥ रिवा ४९ ॥ निधीयन ४९ ॥ वृत्त ४९ ॥ मनेन ४९ ॥ मल ४९ ॥ सुल

यशमतामतायिरुनागमनमर्नसहस्रव। ॥ ३ ॥ काहं वागुहं वापि यक्षहं वक्ष्ये नथवा। इदं वा ३ पाङ्गना
नीत्वा नीलद्रुवि लाक्क वासूखनिवाक्षुयत्यक्षरुवृक्षिविधिसूयं। निर्वृतिर्माविष्मन्ति ॥ क्रिया लायवमववा। सम्यग्मा
गसुरवृक्षिर्वगश्ववर्षुपाटर्नग्नरुप्रपानगुनतामोर्गस्य दतितायिरु। नृकाविलंसनकं च नग्नस्य द्वा नवावित
। नृकः ४ हि ग्वः ४ वामग्नप्रया ४ सं प्रदयत ४ ॥ नि नग्नवक्षि ४ ॥ कुरुया प्रयात् ॥ अहं ४ यनिषक ४ विष्वक्स्मिनि
निष्कम्प ॥ नृलंस्यो वदुर्जववलेववाहवाग्नी। नतषीयेयनामाजसावन्मावग्नय ४ सूचिहिनिवनादथ
कगनुमिष्वयन ॥ अहं विष्वक् नृक लायदया लसका यनि। उर्जकगु वि कानय विवर्ते ल प्रगस्यन। निनाव
सिन्धुमर्कनादिमृवाद्ययग्नकुल ॥ निन ४ प्रमालन कृत्वा यमव ॥ धनयनुयन् ॥ अथवा सन्निगा ४ धर्यममहि ४
यथाजयन। नग्नस्य लंस्ये ॥ यावत्सु दुर्लुताहवन्। नावधार्यमुयावत्सु लुत्तुनासामुरवगुति ४ वदनायगमा
जानीवासहस्रका। विनाहाजनमवायनिनावस्ति विधीयत। विमायाधनिनावस्ति यगपनुविमर्दयन् ॥ ॥ निनिगा

नस्यं नवावयक १० गद १ नस्यं खड्गना दो इदि नवायन पित १ गधन वप निष्प्रायी यति नागः
नद पित १ नजी १ लोद लव सिन्धु पीन सहाद कामन १ कृद १ का हि रुत ल्य रुषा लो वृद्ध वासः
को विग्रहव प्रो धि स्ना गृध्र सुल काम भव उथ न १ नृ वष स्या वास न स्य कर्म समाच न १ नृ जीः
निवर्षा दु द्ध नावन न व दाय न १ नृ न व न व न न स्य य १ नृ नृ १ सु ना इ क १ का वि र्ध मे ध नृ दः
वां न स्य कर्म सिन्धु उथ न १ प रु द्ध ला दि न कु यान ती दू ल्प न थ व म नृ १ नृ कृ काल मि न न कृ वा न
१ पु ध म नं स्त्रि न ॥ वि भ व न य थ ॥ न स्या दु र दृ ल्प लां पि य ल्या से न्ध व न वा उ ल पि र्ध न ग ना दि क र्त्त ना
सा नि प्रा ग दा १ म न्या ग ल ह न ल ना न स्य नि रु उ पृ कृ जा १ मे ध क सान कृ प्पा लां १ म न्नि व स न्ध वः
१ न स्यं का ष्ट उ ल १ पि र्ध द श्वा र्त्त स्या य वा ध न १ नृ य स्मा न न १ थ लो द स नि पा न य न लु क १ म न्नि व
१ न्ध न मे नि व स र्प य १ कृ ष्म व र १ व म न कृ ल पि र्ध नि न स्य न्ध नि वान ली १ ना ही न म स्या पि र्ध

न सावित्रं सधुं वया कुरु संवतिरु ॥ यधमनं वृत्ते ॥ नृधट्टं हर्तुं प्रकाश ॥ मर्गं च यनिम
 ज्ञेयं दीरुदासि हने मनो मर्गं ह्यनपेक्षामागामुखा ॥ १ ॥ स्मृता हने ॥ मधुमावयव ॥ १ ॥ ॥ हीना ॥ १ ॥
 नमितामना ॥ १ ॥ कर्मि सुमाययं दयानासायुट्टं ॥ १ ॥ मर्गं ह्यदि विवहं वरुणादाय वलावतं ॥ १ ॥ का
 ननद्युननन्वाननस्यां दयादिव कल ॥ १ ॥ गुरुं पेशु हमेथवास फाहं वासुयन्तिन ॥ १ ॥ मर्गं ॥ १ ॥ जिना विनकच
 व्यापदा विविध ॥ १ ॥ स्मृता ॥ १ ॥ दाया ॥ १ ॥ कर्मा ॥ १ ॥ विष्णु यासाय धाकर्म ॥ १ ॥ जिनासादिना ॥ १ ॥ सयविर्ला
 दहदक ॥ १ ॥ दनना ॥ १ ॥ गवलहीर्न मान्या वार्म सुऊगद ॥ १ ॥ मुख ॥ १ ॥ कर्मा ॥ १ ॥ नाद ॥ १ ॥ वागपिरुगदन ॥ १ ॥ अका
 ह्यपतिनयेव ॥ १ ॥ कर्मा ॥ १ ॥ यनायन ॥ १ ॥ यशुनं वृत्तन ॥ १ ॥ स्रुहं वास धूनय ॥ १ ॥ यथा सनर्कनं यय ॥ १ ॥ विष्टं वृष्ट
 माशुन कं कर्म ॥ १ ॥ नस्य पथागना हन्या दानन कर्त्तुवां नृजं ॥ १ ॥ कर्मा ॥ १ ॥ सयविर्ला ॥ १ ॥ दिहदका ॥ १ ॥
 नस्य स्यादननेन ॥ १ ॥ तथाना नाय ॥ १ ॥ तनवा ॥ १ ॥ माषादिना वास ॥ १ ॥ विरि सुददुषज ॥ १ ॥ साविने ॥ १ ॥ नेहं कर्त्तु स्यादा

नवकवलयवननवसा। दद्यात्तिलसंदापिलं सर्पिमूर्धनि भववापमाषाण्युफा नास्त्राति वंता नूचक
नादिषे ॥ कृताश्च गन्धरा कात्थद्विगुसंभवसंयुक्तं काष्ठा नस्यपथा गते पद्माद्यो नं से कल्याने ॥
यादृष्टि नवान्तरं मन्त्रास्तु स्याववास्तुकोऽपुनि मे नस्यमाया उदिविविद्रमिनामता। पृथिक ॥ ६॥
स्तिनगिकथा ॥ स्तुतनतिविनिनिनिनि ॥ स्तुतगुनिद्वयं यावन्निर्णयं गंगदुर्गं न नथन ॥ ७॥
स्तुत्याय ॥ सविद्रने दादत ॥ प्रवं विवेन वेसे रणे नखरि ॥ ८॥ तल उद्योग ॥ सदयामर्धनशेष्य निमल ॥ ९॥
द्विविद्रक ॥ समया ॥ यनिमलस्य वृत्ते ॥ १०॥ काष्ठा उद्वेग ॥ पुरा नदन्त का कान्त गृहानिर्गमन
था ॥ यायामवयवायान् विमृषा न ॥ ११॥ कवला न ॥ राजनास्तु दिवास्वप्राप्ति न नथा ॥ वमः
नान्कनथा सारं यनिमल ॥ १२॥ ययुष्य न ॥ यनिमल न साम्या नि ॥ १३॥ वा ॥ १४॥ नूजा ॥ १५॥ विहान नि
मकं हाना ॥ गिवा सन ॥ १६॥ का किन ॥ १७॥ नन ॥ १८॥ नय ॥ १९॥ नि ॥ २०॥ वि ॥ २१॥ वमन ॥ २२॥ न

नस्य निनूद्वेगान्वासनं ॥ २३॥ नानि पद ॥ २४॥ नानि मनी ॥ २५॥ निशा गनन ॥ २६॥ निशा वि
विर्तामनन ॥ २७॥ ॥ २८॥ यधुसपान विधि ॥ २९॥ यमसुषुष विधि ॥ ३०॥ का ॥ ३१॥ मानोद्वेग ॥ ३२॥ का ॥ ३३॥ लानन
नवामन ॥ ३४॥ लानन ॥ ३५॥ मेनस्य उपस्था ॥ ३६॥ यायागिक रुधा ॥ ३७॥ वृत्त ॥ ३८॥ लानन ॥ ३९॥ ययुष्य
इनेव वयन वसस्य रपया ॥ ४०॥ धनका ॥ ४१॥ वव ॥ ४२॥ यधुमा ॥ ४३॥ रवे ॥ ४४॥ नाना ॥ ४५॥ लानन ॥ ४६॥ नि ॥ ४७॥ द
वसि विविद्रु ॥ ४८॥ नाना ॥ ४९॥ नि ॥ ५०॥ रुधा ॥ ५१॥ पिपा ॥ ५२॥ नि ॥ ५३॥ दा ॥ ५४॥ लानन ॥ ५५॥ नि ॥ ५६॥ नि ॥ ५७॥ नि ॥ ५८॥ नि ॥ ५९॥ नि ॥ ६०॥ नि ॥ ६१॥ नि ॥ ६२॥ नि ॥ ६३॥ नि ॥ ६४॥ नि ॥ ६५॥ नि ॥ ६६॥ नि ॥ ६७॥ नि ॥ ६८॥ नि ॥ ६९॥ नि ॥ ७०॥ नि ॥ ७१॥ नि ॥ ७२॥ नि ॥ ७३॥ नि ॥ ७४॥ नि ॥ ७५॥ नि ॥ ७६॥ नि ॥ ७७॥ नि ॥ ७८॥ नि ॥ ७९॥ नि ॥ ८०॥ नि ॥ ८१॥ नि ॥ ८२॥ नि ॥ ८३॥ नि ॥ ८४॥ नि ॥ ८५॥ नि ॥ ८६॥ नि ॥ ८७॥ नि ॥ ८८॥ नि ॥ ८९॥ नि ॥ ९०॥ नि ॥ ९१॥ नि ॥ ९२॥ नि ॥ ९३॥ नि ॥ ९४॥ नि ॥ ९५॥ नि ॥ ९६॥ नि ॥ ९७॥ नि ॥ ९८॥ नि ॥ ९९॥ नि ॥ १००॥ नि ॥

पृथिवीसुगन्धिवदनाह न ग । वदत न पि वदमं । वदननेव संत्यज न । नासिकास्थानं ४ पिच्छा । मूत्रवने वचा
 मसू ४ । सवावसंपृट् द्विक्का कल्मसमानदापि न । द्विजनयं निवन्ध्याथ वत्तं नने वधूपय न । जलादि
 कल्मसमनं सिग्धं सृज न समुद्रो नने वनगाइ कल्मसकाशश्च द्विक्काषलं वामनस्तोय यममिश्रं द
 श्वाह मस्यमानकं खलनिम्बववाद्यश्च धूपनं संपुनस्य न । नन्यपि धूमागदृष कल्मसागगभनय
 न । मयूत्रपिच्छनिम्बस्य प्रणालिवृहगाहलं मनिरे हिं गुमासीव । विजं कर्पासं सूर्यं । द्वागनामालि २०
 निर्भाकं विज्वदेनालिकागमागऊदनश्च यूर्य हि । किश्किद्वन विमिश्रितं । गृहं मूधूपनं दण्डं सर्वान
 वास्यहानजय न । पिशाचाकसानहिलो सर्वे कनहनं रुव न ॥ नृपनाजिगाधूप ॥ नयाति धवे
 जान्याह सने वं गहवान्नापि चतुर्विधल्लुतानि खलुनिगालियुक्तिन ४ । याजिनानि पिखलुयं न ॥
 सिकानवसंदिता ॥ ०० निथागननक्षि ॥ ०० नविधिनामनन ४ ॥ ॥ चयनक धूनि ४ ॥ गनकास

खरावन कुर्यादिकाधुनि नन ४ । चन्द्राषयनि ॥ ०० रुद्यानस्य न कथं निर्यत ४ । विस्महाहवनाग
 गन्धलनं विचरुथा । रुम्यादिपक्षरुताना म न न कयुल ४ । मृग ४ । ०० रुगपयन ॥ ०० यं प्रकनिस
 मसंरुतं ॥ ०० थदाह । गपाकवने कवर्षसृज ४ । गृहो । नन्ये समगुर्द्ध हि । विरुयं न विनं नृत्ता ।
 वातनकागथाकृष् संपाज्जुर्जयनिल । पालिलो । गहापदये । विषद्वेव ॥ ०० नित ॥ य कुर्यदा
 पचीइदनागनकाक्षिमक्षिषू । विदनासेननागपू । वयुषश्च पि ॥ ०० नव । नकाहिष्यदगंदाया । प्र
 तिघातस्यहनव । यद्वाहविसर्पय । विद ॥ ०० पित्रकोइम । कल्मेष्ठवालनकात्ता । पाकदाह ॥
 गिवा न डि । उपदं । ननकपिरुन कसावि ४ । पुनस्य न । पुषा । गपू । मी । नो । लोका । ला । व । क । न । पि । न
 थवापि गिवावाकन कमाइ ४ । पुनस्य न । पक्षकर्मविधुदस्य । पिगलरुस्य । वागसि ४ । सर्वान् ॥ ००
 थयूताना । मूदनमायकाजिनां । चूड ॥ ०० रुतानां । पा । पुना । धि । नृद । हि । न ४ । डने । वा । न । व । र्ष । स्य

गतसफनिकस्यतमापातनकस्य नि । तस्यनगटक्रानिष्ठासिर्नष्टं दशमकुलमिर्गंवतान्
 ऊलोकारुसमापनु लवयत्वादशमकुलपदमकुलसमापनु गिनासर्वान् । अविनीनकंदृश्यगि
 पाशाविनेवयकृयनि । सानलाषमन ४४ ॥ वीनकंनवकदावन । आधमाकृपकंरुषां निमिनंर
 निभानुजं । पकाद्याटं ४४ ॥ सेकागदिकादाहृषयापुनां । कुनननिधुनंनकं मनसंवाकनातिहिः
 ॥ दहस्योत्यहिवसुजादहसुनेवधायन । विनानेनवे ऊऊ । नोनकदकमनोवध ४४ ॥ गानापवानः
 कृपिनेधुननकस्यमानन । काहनसपिषा ४४ ॥ धंसयथंयनिषययत् । कोलस्ये निष्ठावदहनिः
 नय्यागमांस ४४ ॥ नस ४४ ॥ समुचिनयानका नंवाषष्टिकामना । पोशमनिलधूल्ययाधनदकसंरुयं
 । मन ४४ ॥ सासंरुवचिकंसेम्याविमाविनंरुजि । व्यायाममेधुनकाधेगानस्तानयवानकान् । प्रकास
 ॥ दिवानिडाकानाहकंदराजनं ४४ ॥ कंवापिमदाजा ४४ ॥ यययवदहाहवत् । रुनिसुत्रैरुवसुं

२१

मकाधदगवहा, कोधमविकारयपुना । मन्दा ४४ ॥ कोलधमाः
 रुवकाप्रायुवीसामागनीयसी । लधोवहनिदीपा ४४ ॥ लुथा
 फसा ४४ ॥ तिहिना । गीधानागमलापानदिना ४४ ॥ निस्माकन
 ॥ ल ४४ ॥ मनकस्यवरुवदकदिननव ॥ ४४ ॥ निशागनन
 ॥ नृथजिदायनीका ॥ पोनाजिदाखनस्यगसिर्दितामाः
 ॥ युयानिपिदिता । कृष्णसुनूटकोषुर्कसनिपाताधिकुं
 ॥ निशागनन ४४ ॥ जिदायनीकानामनन ४४ ॥ ॥ नृथमू
 ॥ स्यादहन ४४ ॥ लनदलागेलस्यविद्वान्यातिहायनान् । विका
 ॥ नागानविकागिनर्धेन् । स्यान्कक्षसाधुमुलगतसा ४४ ॥ नागभर्जनः

नां वनुं कृषिं यथा योपातानुनंतं तसमं यपिष्ठं स्निग्धं कस्तूर
 पकोपमाउत्तुर्न साहासं सीवानरुजलाषमं यपाकनहि
 पूरु कलुषं सनेकं जीर्णं केन इमं दृष्टं पीतं स्यात्सन्निपा
 नलायं पूर्वार्णवर्धनं विक्रयदागाधं सुखीरुवतु ददित्वा
 पुसवर्गं सुधामाग्नं ददादिनेन विज्ञान्यावर्धनं वि
 ने सखां पसवशदादिदितुं नरुवत्यश्च कुनं मनस
 स्यात्ति वि काशितं हलं कर्म से निता कान संयुक्तं क
 पापवर्धनं सुखं स्वर्गं मूलं पटिनां ननं वलुगुं यः
 पादकान कृती न किं यां कयि न हंस कान लुगाशयं कम

१३

तातकः पु कनाथान नियतं प्रवना क पथं वउत्तु ॥ जामला
 निः ॥ नागनासाय दहा ॥ नासास्ते केन तानु लित कन प
 द्यु स्वसन समुदय ॥ नागगाय ॥ सुक न्य ॥ सादक्ष निरुपश्रु
 नां निग्राशागतं न मिच्छा ददि पनी काना मतन म ॥ ॥ ने
 निद ॥ अथ दसं संहितया प्रकथान गदान्महापातक जान कला
 माथो ननु दान सुखाय सुत ॥ अतः ॥ से नीलासिं वदिन कलोथाम
 क्लम ॥ म ॥ पनि पा लुने च यि नया श्चान सुकर्म सिद्धे ॥ स्वादाविको ॥ सका
 मज्जि ॥ मल नाम ध्या ॥ नागरु वयुर्गलगु नाग ॥ कृषं वव मी मन लं वि षल म
 दादा वार्ययु नि ॥ साद स कृष हत्वा ॥ स्यात्कृष्ण काज्ञान मधादना लित का विउद्वानि

रुदिसम्यक्पनिविद्या कलिकृष्णकुमानांकटकार्यनंवा विषयनूक्तनिजमनुपूर्णा
मह्यनूक्तानि (१) हि काधूमनशाहपिष्ठाविकरुकरु ११ द्यादिवसनमानु ४। ववाः
नलारिर्मृदिनमुसुन ४। मिश्रावलाधेनधदालिकायादिनसमाधेनः
विमर्शसुतंजंवाननीनलनन ४। यगमरुं १। सनूअहा १४। यगरुमक्षपक्षां
ह्यानुगने ४। यदाययमालमनिश्चनलविदधातगन ४। गिनस्यास्यज ६
वं १। वानयय ४। नगवजं संक्षोतसु ४। यदिक्षाययमूर्धपात ४। कद
पन्था १। वलपकर्षायवदालिकायांस्वधाजलसेन्यवयूर्लूग
कानांदवसंपयको १। स्तिन ४। स्तिनवंलरुन ३। निनायसकाशि
दापादसु ४। दि ॥ ३६ ॥ मृत्वापोलजलायायकापालीकादि

आमा कयाति
 सनसमानि
 मृमया कंय
 यमानिकना
 पूननमम कंय कः
 निवानयनमू क्येद
 कयाडिने नदा
 थापी नदी
 द्रव्य

फकंत्तु का॥ महदाषरुदाषासलदाषको॥ नेतदाषव्यपक्ष
 पक्षलनूप॥ यथानिज॥ पक्षवर्त्त॥ कृष्णवर्त्त॥ सितवर्त्त॥ श्वकं
 मलदाषन॥ वलापलिनथानिर्होवानिदाषायजायन॥ ददु
 का॥ कामलांपाशुनागंवमहाकृष्णल्लादनं॥ यमहं॥ ध्वनकृष्ण
 वसिष्ठहं॥ जालाकृष्णदर्सं॥ शर्ष॥ कापोलिवीर्यहानिश्चकृन्ननीनि
 यद्विज्ञसंयुक्तामलयुक्त॥ यथानिज॥ नागवर्त्त॥ दाषायमलादस्यहं॥ जनां॥
 दाषसुसोत्त॥ ज्ञा॥ यदर्सनसं॥ उर्वि॥ पक्षायवश्च॥ कृष्णविन॥ ह्यज॥ ध्वनानकसु
 दिधीयन॥ वा॥ अल॥ कल्यानकल्याणुटिकायां॥ यता॥ दृज॥ धा॥ उ॥ वा॥ दन॥ धा॥ वै॥ श्च॥
 सन॥ ज्ञा॥ पक्षनिज्यां॥ मनि॥ यथ॥ के॥ पि॥ क्ष॥ कं॥ य॥ क्षि॥ का॥ यं॥ धूम॥ लि॥ म्या॥ क॥ ता॥ य॥ श्च॥

[illegible][illegible]

(म)षयन्पूजयंपूटदयं। ननविधिनास्वर्गनिनूतं जायममृतं। नृनिध
 नंस्वागन्नंलं। समर्थकाश्चनदावेदिनं कृत्वाथ। गालेकं। ननदसायनं वलं वृष्यं नानं दया।
 जिन्। स्वर्गनिहृजतिवमदासयमानामृताजं। नोनानजं ४ यनमममृतं वागविरुद्धयानं। एका
 विषयमिगजवं वृष्यमायूमय्यं। वलंस्त्रिंशं नृयिनमकरुदीपनं गानवीर्णनउद्यामसकसग
 ददंशामसुनदुवधि॥००॥ यदुमानयु॥०॥ वाद्यीकन्दगर्तवज्जंदासायनविषयं। सफाहंका ३२
 उवका। पकेलतुविमलंरवेत्। वि॥ सफकृत्वनरुपंखनमयनसचनमत्तु॥०॥ कं पिद्धा।
 न। अलकलिर्नक्षिपन्। वा। अगंवाजिमूयनसिकं पूर्वकमनय। रसो। रुदवि॥०॥ कंचकवत्क
 लं। सौलैकं पि॥ नननं॥०॥ निवजमानं॥०॥ यदुनपिउक्षिपं वक्रोनाविकानिददत। वज
 स्रुदिनशार्श्यामसर्वयनेनवन्। रावयचूर्निनं वजं दिनेकं काश्चि कनच। वस्तुनेनजं नृनि

निनाजयत्यवसर्वथा॥ वशासुनसंभानसंगन्धंमृतं गामपिरुत्तानथा। कदकावजिदृदन्तहमाकोट
 कलंविषं। ननानिसमरागानिसर्वोर्गं दन्तेनारुतं। रूयित्वा रूतसम्यक्मदयदजिकामृना। द
 काका। येसुत॥ सम्यकवटीटकादमानन॥०॥ विनादविद्याधन॥०॥ यारवागसुननकलं। शुलं।
 गुल्लंनथापापुयहेष्यं॥०॥ कमानजयन। रूजील्लमामवागशुभादेहगदनथा॥०॥ निविनादः
 विशोधनानसंभान॥०॥ कलविहृषलं समनिर्वदेह्युनकंवधि॥०॥ यदोसागनलोचनहिमन
 विहा। गेसुधानवि॥०॥ खलान॥०॥ खलमदयदविजलेयुष्मायमा। लानिग॥०॥ यादशु कनदनि
 दपदलनपेशननमानस॥०॥ यक्षननानस॥०॥ शुद्धवज्रविषयं धूल्वीजं विहि॥०॥ सम। वज्रुर्ध्वदि
 युनंशार्पहमका। नाविहाविनं। वज्रानयमंशुर्ध्वर्ध्वयुष्मायानिर्गंजमानस्यैकंमकाहिनादक
 स्यनसनवा। मलाकनाक। लानामसमसुद्धननागन॥०॥ काहिर्कंशाहिर्कं वशाहिर्कंवचुर्थकं। वि

प्रमश्रुतिदायातुं हन्ति सञ्चानसंनय ॥००॥ निमहा केना कृणु ॥ नागंगन्धकं नामकं समस्तवं सुता
 दं रागाविषं ननु हीजय पातमेमुपदिनेन ॥ १ ॥ स कं वं विनं पयमेमश्रुतं गव विरु निने ॥ नदिः
 पारवानपूटं दत्वा कं कूमसंज्ञा कं सरुदले ॥ सैव ॥ ननु द्वियन् ॥ रागमर्द्धजयपालयपालकाज
 ममृतं नडुलं मेका कृत्य उञ्जानागवसि धूचि कयूनं सर्वान केनानागयन् ॥ गूलं सैय हली गदं ३६
 सज्ज ० नंदधन सभविनां सर्वथा विवतां नृणां हिनतमे ग्येनाम निनामिने ॥००॥ निविनाम
 निनस ॥ १ ॥ षट् कृत्वा विषकृषमा कर्कड् ॥ ग्वसप रात्रुक ॥ सकाशिकस ग नलद्विहो वृक्षां निधा
 पयन् ॥ सफारुन ॥ समुद्रस्य श्रुतं वृत्तं कनं न ॥ सचिकारुन ॥ नामवशा गुफनमामेन ॥ सैरु
 नामो विलयस्य वन्त ॥ काशिके पविन ॥ वदन् नये यथा कथाम हाभाहय साजन ॥००॥ नि सुचिका
 हन ॥ १ ॥ न स दव ॥

[illegible]

वन्वचकुरुत्तमविनक्ता (धृष्टशतेऽपमानिने ॥ साधककृतमस्मिन्सामुक्तकानपद्यके ॥ तद
नालेत्यर्थक्यास्तेसंगलुषधनान्दत्तनागध्वनस्यनिर्लेपोत्सर्वकनान्दयन् ॥ अगन्ताका
दिकंनसंवत्सपुष्टिपदापेदं ॥ ॐ नित्याकादिनसं ॥ दत्तान्नसाधुमोदायनदत्तांशसिद्धिर्कोः
किञ्चिद्वदनीयेयंवाविषाज्जगत्तमत्तं वस्तुपूतानसायमकालादयाऽपाद (नविनं ॥ ॐ नि
षज्जनेननसं ॥ दाहामुवाहनिद्वद्विस्तृतामागथिदानवदहनसिद्धवंकष्टनास्त्रामीसीन
वनीःशाननासाटकनानेनलेयसुविद्यायेयन् ॥ अस्मिन्मन्त्रकंतामवद्वनेविभाहसं ॥ ॐ
त्यज्जानकनसं ॥ ॐ ॥ अथकनहनोतिद्वस्तृति ॥ निरुत्तानेजनीयुर्मकलकानीसुगनथो
विकट्यन्त्रिकंमवायुहवीधनवासक ॥ कटकापलूटंमसंयायमासकवाहकं ॥ निम्बप
कनमसं वमपूयश्चवत्सकं ॥ यवान्नीलशवाहार्गानियुवीर्जसूनाहृज्जवचोत्तकपयकोशा

न च नाना विधा वला ॥ गालि पत्नी पृथिवी पत्नी विठं गंत न न कथा ॥ विष्णु का दव का चंद्र च का
कंपन पटा ल कं ॥ आ व क र्ष ह को र्वे व न र्वे ग र्वे न ला च नं ॥ पृथ्वी कं च का को सी पृथ की जाति
पृथ कं जाति पृथ कं गाली स पृथं च न धा सम रा गति र्भू य न ॥ सर्व र्भू स्य वा र्धन के ना न पृथि
य न सूधी ॥ अ न ग सु द र्शन ने ना म र्भू दा ष ष या पे ह ॥ क र्णो ष्व नि शि खि ता न ह न्या त्वा य का या वि दाः
न ल ॥ अथ क र्ष स्या ग र्भू जी ष्व धा उ स्मा न वि ष म क्क ना न ॥ स न्नि पा ता रु वां ष्व पि मा न या न पि ना ष
श न ॥ ना त क्क ने को हि का दा ह मा हं न दु जि म र्षा ॥ अ सा का र्ण च न धा पा लु क्क डा गं ह नि का म तां ॥
वि के पृथ क टि जा न पा ष्व गू ह नि वा न तं ॥ ना ता म्भ ना पि व द्वा मा न स र्व क्क न नि वृ ह य ॥ सु द र्शन ने
य धा य क्क दान वा ना वि ना र्ण ने ॥ त धा स र्व क्क ना लो क र्भू म न दि ने ना र्ण ने ॥ सु द र्शन ने र्भू ॥ क र्
हं धा यी कं र्भू ति का र्ण ग ल्हा र्णी य पो ष्क नं ॥ म यू ना र्भू म ति षा ष्म र्वे न से न वां हि ह क न ह

[illegible][illegible]

मादिकं ॥ लुक्कया कल्यनया वटादिना कल्की कृत्वा दनागलानि लिख ॥ एक स्त्रिय ॥ ४२
त्युटपा कजेने सु ॥ सन कन की दयनाति सान जित । रि । पलन न के ऊ मूल स्य कृत्वा
यामेलय वन काये पो दा व लष सिने पूता स दं यने ॥ प यन सो व व ल य व का ने वि ॥ से
न्य व पि प्य लो भन को न्य य वा जा जो र्ने द ला प ल द यं र लि को द द न मा य नु गानं की द
न सं य नं य को प क म नी सानं नाना वे ल स व द नं द वी नं य ह ली ना ग ऊ य य व य वा हि
कां ॥ कृ ट जा व ल ह ॥ कृ ट ऊ स्या प लं या द म ह रा ग ऊ ल स नं ग य व वि प य दू था धा ग
मा द क सं य नं यो वे च लो सि का रा स नृ नं ग म य क ल य न ग ल्या द क र्प न क ल पि व द क य ति
सान वा नो । श्र व ष्म म न ला यो पि न मृ हो या नि । गो न व ॥ लं य कृ ट जा व ल ह ॥ य व ला पि य ली
मूलं पं य जा न क ना ग ने ॥ म नि या नि ज ला जा जा धा रा सो व र ले ॥ स मे ॥ ४३ वि क क्ष न का कृ प्या

विल्वदा डि म दा यो के ॥ दि यु ले ॥ ४४ ल सि ने ॥ ४५ पि न्ना द गु ला कृ ने ॥ ४६ लु नि सान य ह ला द
य य ल म ग ला म यान । का र्ग ष्म सान वि दि का ॥ क पि न्ना द मि द ऊ य न ॥ क पि न्ना द र्क ॥
य था ल नं र व दानि तथा गो सान नान नं । त्रि सानं नि ह र्को व ल न रा ग नृ नं ज ले । य था ल
नं तथा द्वा ने म ना सा न पू प जि तं ॥ वि ना डि ने पू न त य र्ग य हा ग ऊ ल सा धि तं । त्र मे नं ॥ वि
षा म स्या । सा म ना सो न के वि ष ॥ वृ ॥ क र्प ग न्ध क म द न म द म र्को क र्पा वि र्को क र्प र्को
कृ दि रु ला न य प कृ ल व लं सा द वि क र्प पृ थ क । न दू का न न दू ल उ ली नि दि नं त स र्व म
का कृ न र्वा द द्वा ल मि ने स का ष्म क प लं म द्वा ष्मे गो सान न ॥ ला ही व ल ॥ ४७ । ला नो व ग
ह म यं ग गु न स्त्रि ष्म न रा ऊ नं । या या म म नि स का प मे नी सी नी वि व ऊ य न ॥ वृ ॥ ४८ नि ग्रा
या ग न न डि ल्म म ना सान वि दि साना म न ल म ॥ ४९ य र्ग य ह ला ॥ ४९ गो सान नि वृ ल पि

मन्दाग्रनदिनागिनः। ह्यः सन्द वितावर्गिण्यहतामविद्वयशतानके कनः सर्वगश्चदा
षेनयथमदिने। सादृष्टावदुःखकाममभवे विमृशति॥ पात्रे वा राजवाशे जातिह
पयद्यानि सिन्धुवेः सञ्जयस्य उमादकिट विपरिः कृष्णजयस्युते। साशाषेः स
संरुतजिकेः सञ्जिते ह्यक्रपयके नोपुष्ये निरुदये मिते सने लकृते वेः साक्षाद्वृत्तमिदि
लिः। जने नामलकोन सञ्जिते लयासादृष्टावदुःखकाममभवे विमृशति॥ पात्रे वा राजवाशे जातिह
सञ्जनादुक्तिः। साकदिमुहतागदाः सञ्जिते दजाः कोऽगः सञ्जिते मयाः सञ्जिते साः सञ्जिते
यथसुनादननञ्जः कल्याणकल्याणजयते॥ नितकल्याणकविलहः। हनिम्वकोटि
कद्विकमस्तनिकाः कर्षासिकासिखिमले पितृत्वयाः। त्वकोटिजायतयतुक्
मिवागुजम्। पीननृत्तमिह हनदुहताविको नान्। वि। जातिरुहिलवः। अतापयत्वकनाग

कसनेः। कर्पनचन्दनतिलक कक्षानागनामले। गालासपिप्यालीपयस्तुलजा नकवि
जकेः। सुवीविदुः समनिवेः समहाले विदुः। यावश्च नानिचुः। निदद्यादुर्ग
नावता। सर्ववृत्तसमादयागर्कनासु रिष्यन्ते। कर्षमायेनतः सवाद नमयुनामूवि
कृत्वाधुः। तस्यपरांवाङ्मुहताकागुष्मसानु रिदुयाः। वानः। अथपतिः। अयाः। प
मर्मयानि सर्वथा। अतारुलोद्येवृत्त॥ ॥ विदुः कर्षिपिलीमूलदोहवत्त निराया
षदिदुः उमादावचरीये कर्षकानयनः। सुटिका मायुलुः। सदादिमस्येन सनवा। क
ताविपारयस्यामदापयस्या। वानर्त्तरीविदुः कादिगुटिका। यदहता नागिनसुर्कसं
यदहिलघुदायेन। यथमवृत्तपाकि त्वात्तविदुः। पकायने॥ अतारुलोद्येवृत्त कक्षाना
गनवृत्तनेमिहिनः। सञ्जिते। यदहनिमदेमस्युः। नकदुः। गालिनाजयनी। सुददि

एकैकं यद्विद्वान्नामगुरुं ब्रह्मवान्मूयकृच्छ्रवान्सकावगाहः ॥ निजिनाभ्युदहाः
 ॥ १ ॥ अविधिर्विधिपथाविकानाः ॥ २ ॥ दोहोऽसैनविदोनाइष्टुर्नयकृच्छ्रपूषिलपहवष
 र्थाः ॥ यवज्ञानसमायुक्तं पिवत्तुं प्रकामगः ॥ मूयकृच्छ्रविनाभ्युदहान्त्येवाभ्युदहाः
 जनैः ॥ नवादिद्योतकं शसिधेयवत्तुं किं लिङ्गं ॥ लक्ष्मिकविवन्मन्त्रं निजाज्जसन्
 मादिकं ॥ ३ ॥ नैमिशान्नमन्त्रिभ्यः मूयकृच्छ्रं किं लिङ्गं नामननुदः ॥ ४ ॥ ॥ त्रयमूयकृच्छ्रानां ॥
 मूयनामगमं दोषेन स्यात्तस्यैव दर्शनं यदापवर्तते मूयं मूयकृच्छ्रान् ॥ स उच्यते यत्पलाशव
 न्मुकाद्ये पात्रिहृदा लिङ्गादपि ॥ ज्ञानादकनमदिनां त्वेगलोषलसंभवा ॥ पिवत्तुं अद
 कं सम्यक् कति को दत्तं नृपथकपृथक् ॥ विहृता कल्कसंयुक्तं लवणं वापि यः पिवेत् ॥ उ
 त्कर्षेत्कर्मैकं वा स क्षौद्रमूषिर्न निजि ॥ स्त्रोभमनियसे ॥ नृभानिर्नयस्य सिधेयं ॥

मैथुनापनमसुहृद्वृहलाशाविधिदिनः। विष्णुर्कसा निवायिववलाकालाचिसा निवा। ५५।
वविष्णुतापि प्यह्यसुधावपि यात्रारुवतन। एवमधुर्कदशासुख्यव्यामलाका निव। ५६।
रुर्कपुत्रदतः। कर्त्तुर्नरुसुमन्तिनः। ५७। कानदा। लज्जुदा। लन। सेदमवताननयन्। ५८। निवेः
निष्टनेववजकनापसुसैयुर्गुगमकाशयितसुर्वमनिमानुपविमिष्यथगननामिन
पिवेकासयथदाषेयथवर्त्तवागनना। ५९। विवेनेना। ६०। एषमनेनायथाननो। ६१। नकनना
यन्निनेना। ६२। विवेदिद्युननागना। ६३। सर्पिनतन्ययुगुगमन्मिगेर्नहनविनातन। ६४। सुहृदाषया
निदाषमूयदाषनलेवयथथाकृत्वा निदेसुर्विष्विणकाशमनाषिहा। ६५। विणकोशं॥ वः
न॥ ६६। तिथागतनद्विर्लम्भमगाद्यातयिकि। ६७। सानमिनन। ६८। ॥ अथभनी॥ निरुक्षम
उमार्गियायातनाजनयहृन्। ६९। नैसोनेटैवेसेकेनो। ७०। नोहेलेके। ७१। केनेकनिवसिपुद। ७२।

सांभनीनिगयनवीनगन.सहयनदय.दरुवृ.कादनीकुलकाभा.भरुदाग्निमन्त्रसानट
वसुकननिनारुलुक.कुन.४.कन्दोवनकपोन.व.क.ध.द.शा.वे.नि.गु.स.ने.॥वाननवादिनि
शषेग.ल.भ.मान.न.जी.ऊ.र्य.न.॥वाननवादि.कं.कार्प.प.श.र.न.स.म.नि.र्ग.हि.न.डि.पि.र.सं.रु.ग.म
भ.नी.दि.प.म.व.उ.।न.न.त्वे.के.नि.ला.रु.द.गु.ल.ग.भ.इ.न.के.४.कु.न.४।क.षा.य.का.न.सं.यु.के.नां.प
हि.न.ग.प.नं.॥००.नि.था.गे.न.न.दि.ल.भ.म.भ.नी.यि.कि.सा.ना.म.न.न.३.॥ ॥नृ.ध.प्र.म.हा.४॥द.३. ११
ष.दे.यो.यि.व.त्तो.दान.४.क.रु.पि.र.स.मी.न.जा.४।सा.श.का.या.नृ.सा.श.सु.प्र.म.हा.४.क.स.॥भ.नृ.भ
१॥भ.मा.क.का.दे.वा.आ.ह.ग.भ.धूम.वे.न.का.ट.कि.१.कु.ल.त्वा.श्व.हि.ना.भ.श.म.हि.ना.स.दा.१.सी.वा.न.३
४.सू.नां.सु.क.न.ह.ई.द्व.न.यु.उ.यु.न.१.श.भ.इ.ऊ.न.सा.न.पि.र.प.म.श्र.ग.नि.व.ज.श.न.१.नृ.॥भ.॥भ.इ.व.न
न.३.वे.नृ.॥भ.ना.का.का.न.ग.व.भ.सु.न.१.श.भ.क.पि.न.३.ज.मृ.व.पि.या.ह.म.भ.स.मृ.व.१.म.भ.क.म.भ.क.न.३

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

नवदनेभापिवचादिहलाकाप. विवृणक्तकसैयूने। नृनिद्वकासिकनालाहलमसकृलुषपां
बुद्धिः। ममूयविद्वसुतगदधानल्लुषाविद्वि। सोराडूनकनिर्यहादिहसन्धवसैयूने।
। नृविनादिदधिहनिपानपातनिधिविन॥ ल्वगवषाडुवामूलं मूलवनकस्यव। कलेन
कधिनेपाग. मयकविदधिजयन। कासीससन्धवगिलाजडुहिद्वु. मिश्राकनावनववे
ल्ललजः कपायभा. नृयननानिनेमयकमनियमाधनिलामयजयति विदविमयल्लमध॥
०० नृश्यागगनमि. ल्लपदविदधिविद्वि. किलानामगनद्व॥ ॥ मयपवृल्लमध॥ ॥ पक
दक्षेनिकन॥ ल्लमधवला नोपुर्वल्लल॥ दाष॥ पकसमसैयूनेनकजागल्लुआवतद॥ नि
मयपवृल्लदिहसुसपिलविलसैयूने॥ धूपनंकमिनाकोर्विलककुनजायह। नृविदेल्ल
व. लसमयकपयू. नृविद्वि. किलेन। पिलविदधिसर्पणमनैल्लपनादिक। नाहिल्लगान्सर्वा

ध. भूपयद्ववदनानशवाशतुजमनधावद्वसुनाकथेभपया. निर्युखल्लुमिजिननापि
मनमेनिद्विल्लानशोन॥ विरुलोउमुल्ल॥ ल्लमनायदातमल्लविद्वि. किले. मिध्वाना
समल्लगानिनजोसिको. निकल्लग। सम॥ सव॥ ल्लमधनवद्वगुटिकोखाददनवासनैसः
दक्षमिना। डल्लव. लवागल्लकगुल्लानद्वशथूपुनागमनने॥ ल्लमनाशायुमुल्ल॥ पूने
नेवानिमयपदातुल्लनिको. निमदा. रोरशाकपाये॥ ल्लद्वि. ल्लमधदनकागल्लल्लमसा.
निनेपा. लुगदनिहनि॥ पूननवाहक॥ मयसुधाविन॥ सय॥ कनैवनेवश॥ सैयूनेपनि
षयशोत। ये. ल्लमधकेयू. केने. कि. दि. द्दु. नेस. पिपा. यल्लामेनुवर्ल्लविशोदनेकोडसेमः
निने। गी. के. या. पयो. क. वा. गाननको. पूना. निनो. ल्लमागशे. के. नृविनवमनयधमशोन।
पकासयल्ले. दान. नवनेवसमासुत॥ का. थर्ल्लगल्ल. गने. लु. वद्व. ल्लमनिदादने॥ ॥

सहि सुसंभवः ॥ यान्ता हस्त्यावयदस्तु कश्चिच्च कालकृतानां निहतं न न स न वा ॥ ३३ ॥
 गतं यवागं वापिवसे न्ववसेयुतां ॥ ३४ ॥ तिसेयाहिक ॥ ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि विदि
 ताते सवयवान्ता निष्ठा ॥ पञ्चदाहोपनैक्यादिन्धनं उदग्मानिर्न ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥
 नृपयिने ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥
 मिदं दत्तं ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥
 ॥ ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥
 धनं वापेयादिकं ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥
 ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥
 कम्पानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥ अथरुग्मानि ॥

[illegible]

रुतापूत्रकृष्णानां विषयं करुणगयाजिनायुटिका। कृष्णगन्धननातीदृष्टवत् ॥ १॥ विनीक
कथिगोशेनवत्रिकयुगुत् ॥ कनवानेनिष्ठादन्तालाङ्गनीननत्तात्रिहि ॥ मातुलङ्गाकेपयसा
पर्यलेलरगन्धनाकनवीनार्थेनलंभान्धायदं ॥ १॥ हस्कारियातानरुदन्तुद्यागादधवना
दयापसेवनाद्यथानिप्रदाषाचरुवेनिहि ॥ १॥ पद्यवात्रे ॥ पद्यालनि
म्विरेलसुष्टुकाकार्थपिप्रदाधदिवासनायांसुगुत्तंवागिरुतांयूनंवासव्यपिदं ॥ १॥ पहन
१॥ पुयाग ॥ गिरुताया ॥ कषायनरुङ्गनाङ्गनसनयवलयकालनंकृथाइपदं ॥ १॥ प्रभाकथ
दहकटाहो गिरुतासमाषांसधसयुतां ॥ १॥ उपदं ॥ प्रलयार्थसधोनाहयतिवर्त्त ॥ १॥ ऊपाऊत्य
मालाकं ॥ गन्धाकानांदले ॥ १॥ पृथक् ॥ कृणुकाहर्तकाधमिप्रदाकषयाऊयत् ॥ कनरुनिम्वाइ

[illegible]

[illegible]

विष्णुलान्त्रि (मयूदयानन्दने ४। कद्रुतेनपयन्त्यत्तं द्युक् विषरुतान्विनेभास (मममं
नदस्यभादुद्विनेविनागकुगसवेषापियकृष्ण नलमगल्पथाजयन। तेषमनिवा
यंगेला॥ क्षात्रीखेदिनया॥ कार्यपोत्वाइनन्दुजसंयुनं नैश्वदेधनतं जियैकेह निनसं
नयं॥ मयिगनपियदुर्लकाकादम्बयुवकुजंगेलाकायमसेवीत्यालकाडा॥ ४॥ विषम
द्वनन॥ नन्दु (ननसमा दोय प्रशस्तेरुनिवा दुनं नदुर्लमधुसपिष्यां निदुल्कात्रयना
नन॥ हलोससवकुषानि जौवदेषगनयर्थ। निलाश्चिहिरुलाकोदयोपरुष्टानशकला
॥ ४॥ ४॥ सफसभासं॥ कृष्णलकामवानिल॥ कृदोवैलजवोजाद्वनिगातवउधेतागसंमि
धममपेनगवांपिष्ट॥ सवर्लकनल॥ पनंजियेयवलोनावल्लराग॥ ह्यदीरागमेककृतिउल
न॥ मरुकावेकसगमस्याऊवानापाटलीयुग। जोगसमरिगादुल्लोचमममधेदिनयर्थ।

संस्थापनं कृतं तेषां निदधन संशयः ॥ १० ॥ वात्सादिजहं ॥ वन्दुं स्यात्वाजा निषयना
स्थानानि नात्र ॥ कं कं व्यापि वीजानि समागं विनयं दिक् ॥ यन् ॥ सर्वदिग् ॥ न सुद्धं संपन्नं
अथ न ॥ देनं ययं गता वच्य ॥ मथनं प्रषयं न ॥ न कर्त्तुं लपेयं न प ॥ अदृग् ॥ कृतिनि विनयं
म्व ॥ मपो न ॥ कदापि याय नि विरु ॥ लाघनं ॥ पर्यटव ॥ लु ॥ जाने वचारवादि न च चनं ॥ पा ॥ ११ ॥
ली ॥ गी ॥ रा ॥ गो ॥ वा ॥ सा ॥ रु ॥ नि ॥ म्व ॥ व ॥ स ॥ कं ॥ ह्य ॥ ॥ मन् ॥ वा ॥ न ॥ ल ॥ म् ॥ वा ॥ वि ॥ न ॥ अ ॥ न् ॥ य ॥ वा ॥ ल ॥ न ॥ ह ॥ लि ॥ क ॥ ल ॥ म् ॥ ॥ १२ ॥
ना ॥ द ॥ ॥ क ॥ पा ॥ ट ॥ ल ॥ न ॥ ड ॥ ना ॥ द ॥ य ॥ ॥ क ॥ ल ॥ न ॥ ग ॥ व ॥ ध ॥ स ॥ फ ॥ ड ॥ क ॥ क ॥ रि ॥ या ॥ य ॥ ट ॥ र ॥ ॥ ल ॥ ॥ ग ॥ न ॥ दि ॥ प ॥ ल ॥ का
न ॥ ज ॥ ल ॥ दा ॥ ॥ वि ॥ पा ॥ य ॥ य ॥ न ॥ ॥ न ॥ ह ॥ रा ॥ ग ॥ म ॥ व ॥ ॥ ष ॥ न् ॥ क ॥ ष ॥ य ॥ म ॥ व ॥ ग ॥ न ॥ य ॥ न ॥ ॥ र ॥ ह ॥ ग ॥ क ॥ स ॥ ह ॥ या ॥ सि ॥ दि
ह्य ॥ ग ॥ य ॥ म ॥ ल ॥ म् ॥ स ॥ ॥ व ॥ ड ॥ रु ॥ ग ॥ म ॥ व ॥ ॥ ष ॥ न् ॥ क ॥ ष ॥ य ॥ य ॥ नि ॥ कि ॥ ल् ॥ य ॥ य ॥ न ॥ ॥ न ॥ क ॥ ष ॥ य ॥ स ॥ मा ॥ दा ॥ य ॥ व ॥ म्
पू ॥ न ॥ दि ॥ का ॥ न ॥ य ॥ न ॥ ॥ उ ॥ ड् ॥ सी ॥ क ॥ ड ॥ ला ॥ द ॥ ला ॥ ह ॥ व ॥ न् ॥ सा ॥ ध ॥ य ॥ रि ॥ ष ॥ क ॥ ॥ र ॥ ह ॥ ग ॥ न ॥ क ॥ स ॥ ह ॥ या ॥ ल ॥ म ॥ ज्ञ ॥ न

मयदापय ॥ न ॥ वि ॥ कृ ॥ द ॥ वि ॥ रु ॥ ला ॥ म् ॥ स ॥ स ॥ न्ध ॥ वा ॥ नां ॥ प ॥ लं ॥ प ॥ लं ॥ प ॥ लं ॥ सो ॥ ग ॥ न्धि ॥ क ॥ ल् ॥ य ॥ दा ॥ न ॥ य ॥ व ॥ ल ॥ प ॥ ल ॥ व ॥ ड
ह ॥ य ॥ दा ॥ य ॥ क ॥ ल् ॥ य ॥ प ॥ लं ॥ व ॥ क ॥ वा ॥ ड ॥ य ॥ ॥ दा ॥ य ॥ क ॥ ल् ॥ य ॥ प ॥ लं ॥ व ॥ क ॥ वा ॥ ड ॥ य ॥ ॥ न ॥ प ॥ लं ॥ प ॥ लं ॥ स ॥ म ॥ ल ॥ य ॥ पा ॥ द ॥ य ॥
को ॥ पू ॥ दृ ॥ ग ॥ ला ॥ ॥ नि ॥ म ॥ प ॥ य ॥ न ॥ ॥ म ॥ हा ॥ रु ॥ ला ॥ न ॥ का ॥ ल ॥ य ॥ म ॥ हा ॥ द ॥ व ॥ न ॥ नि ॥ मि ॥ त ॥ ॥ ॥ ॥ य ॥ मो ॥ द ॥ म् ॥ न ॥ द ॥ द
मृ ॥ दि ॥ डि ॥ क ॥ स ॥ का ॥ क ॥ ल ॥ ॥ पु ॥ लु ॥ न ॥ क ॥ व ॥ र ॥ म् ॥ ॥ र ॥ वि ॥ ल ॥ ट ॥ न ॥ क ॥ म ॥ ल ॥ ॥ कृ ॥ कृ ॥ का ॥ पा ॥ लि ॥ क ॥ कृ ॥ द ॥ पा
मा ॥ य ॥ व ॥ वि ॥ द्या ॥ दि ॥ का ॥ ॥ वा ॥ न ॥ न ॥ क ॥ म् ॥ दा ॥ व ॥ ल ॥ पा ॥ लु ॥ वा ॥ न ॥ व ॥ मि ॥ कृ ॥ मी ॥ न ॥ ॥ म ॥ हा ॥ रु ॥ ला ॥ न ॥ क ॥ ॥ पि ॥ व ॥ नि ॥ स ॥ क
दृ ॥ क ॥ न ॥ ल ॥ ग ॥ न्ध ॥ क ॥ पा ॥ पा ॥ ल ॥ ॥ न ॥ वि ॥ कि ॥ न ॥ ल ॥ स ॥ ग ॥ म ॥ म ॥ हा ॥ य ॥ ॥ य ॥ ला ॥ ॥ ॥ सि ॥ दि ॥ व ॥ स ॥ म ॥ रि ॥ षि ॥ कृ ॥
दो ॥ न ॥ हा ॥ जा ॥ न ॥ हा ॥ जा ॥ च ॥ ग्री ॥ य ॥ र ॥ व ॥ नि ॥ क ॥ दा ॥ पि ॥ को ॥ म ॥ य ॥ को ॥ म ॥ ने ॥ ष ॥ ॥ सि ॥ न्द ॥ न ॥ य ॥ द ॥ न ॥ मा ॥ सी ॥ वि ॥ ल ॥ न ॥ न
ज ॥ ना ॥ द ॥ य ॥ ॥ पि ॥ न्द ॥ ॥ य ॥ न् ॥ क ॥ कृ ॥ द ॥ वि ॥ रु ॥ ला ॥ म् ॥ डि ॥ वा ॥ वे ॥ वा ॥ ॥ जा ॥ ल ॥ क ॥ पि ॥ ट ॥ ना ॥ नि ॥ म् ॥ व ॥ क ॥ न ॥ ड ॥ ॥ वि ॥ ष ॥ म ॥ व

व। कृष्णवर्णकलाध्वजपूनाटशृंगं नृप। इन्द्रोऽपि क्षान्तिस्तवानिथाऽथ हेलमायया। अथ (अ)
नयपुष्पानसर्वकृष्णानिनाशयन्। योमाविशवि काकद्वसिपकादिहर्नपनैवकपिला
दिनं हन्तीनागान्तर्विधवद्वन॥ वृहत्सिन्दुवायं नलं॥ कपोसिकाप्यविमिषुकाकडुः
वाकृतामूलकवीडयूक॥ नकुलसप॥ द्विनिपुनवाविमिषानि सधानयनियलं गी।
दक्षिणं कर्तुं दशपत्रं न॥ पदिमनयन्। वडुलंगे लंगारुषले निवश्यपच हनदयं। दाः
मायलुलसंख्यप्रदापपीनिमिः नलं वरुलं नार्य काष्ठिकेयकभा। अमृनिमलक। वि
रुलामृनिनारो। का। लुयित्वाम्नवानिहि॥ नग॥ पालागुमूलत्वम्। निपिष्ये। अषयन्। मः
हिषामृमृमृपिष्ये। पूनलं पनि। अषयन्। नं। अलकं। अनावायां संपूटी कल्ययलन॥ स्वानगे जाः
खपकाउ स्वाङ्गगीगसंमृद्वनन्। न्द्रे। पून॥ पिष्या। अषयन्। अलकीकृन्। नारकं रसपा

नानं हलिकायां दं द्विपन। सम्यकदू। अथ कृष्णवन्दलान्नविवरुन॥ स्वाङ्गगीगसंमूर्ध
लसं वृक्षाननमृदुनं। हिमकेदपगी कासं निधुमं कृष्णवर्ननिनक कासपदनया। पुनो लंगु
नशागन॥ पृथ्वरलकस्थी कनादिकाषकोदेनं। निलासं किशुनायन्यवखादवर्विशानि
। दिनानिनिर्वागन॥ सर्वथापानवर्जित॥ गलकुर्षपुनी कंश्चिर्गकायाति कंन॥ अडो
दम्वर्नलकडिकाकाकलं। अटमूलवर्नं। वानन कपोलुनो। दिदृप्तामाविशवि कान॥ ननि
हनिनालकं॥ गुञ्ज। रुलाग्निवृक्षनि लपयपयन्। अगकृष्णनृपासार्गहस्मापि। हि। अवि
वंविनाशयन्। हस्मसूतमागन्धामनायस्माममवास्यायां विलाकयन्। ति। अल। लुधुनं रवाद
द्विनिष्ये सर्वकृष्णकृष्णनायं। तालकृनिवानलनपि। न॥ उदङ्ग॥ सपेथु॥ अकिडली। (अ॥॥ कृष्ण

कृष्णन॥ कृष्णविक्रान्तानामनन॥ ॥ अथ गणपि लोददोका०॥ वनटीदं वदह कलु
ले॥ गणपि लु॥ उद॥ सप॥ क॥ १०॥ रुनिगद नान॥ लविके से न्व कृष्ण कृष्ण
मैपहं॥ वृत्तलिफात्रमाधुनिगानपिलुमूदं दे को॥ सुगुनं पि ये ती यमुखा दत्यथान् जनने
॥ गत्येन॥ सफा इदावतदा सर्वदहाजा॥ सिद्धार्थेन कनी कले प्रपन्नाट नि ले॥ सेह॥ के
इनेलनसे मिधं भगद्वरुनं हि नै॥ गानपिलु उददुडको॥ ववि॥ लोष॥ गानपाहा ददो॥ का॥ १
०॥ ये विक्रान्तानामनन॥ ॥ अथ मृत्पिलं॥ अविपा के कभी लु॥ गानिका मृत्पिलं॥ लोष॥ वं
दले॥ लोहा नूहि॥ मृत्पिलं वदद्विषे क॥ वमनानन नै॥ नय विवेकं मूड कानेशन॥ यथा ह्वता
ऊसू कृष्ण सितां मधुयूनां लिहन्॥ निरुषयं वक्ष्यामी॥ कायमि सुगन्धिमधुयूनां॥ यीन॥ अथ पतयति
वाम्नापिलं॥ यद्विड के मूड॥ येष॥ ॥ जहाउ मया वशिवाहयानी त्वयान्निघोटी वदनात्वे काना॥

वर्णसिगाउलं मया कनिषो रान्तपिलं दिवसा ल्युडके॥ गीर्क॥ कृत्तमिहं स्यात्तानिक हीसू
पिष्टपलपत्रिमितसुपि॥ पाविर्गखलु॥ ल्यु॥ निरुपयति गदगल्यलुमात्र विपके गुरुवद
थसूजी गानमाय॥ क॥ य॥ ॥ अन्ना कपियेति पशा॥ दउ॥ म॥ द्विजानि॥ हा कलिजातमि
के सनेव दारु॥ ह॥ ह्या मृपिलमनू वि॥ क॥ य॥ म॥ यि॥ लं॥ ग॥ लं॥ व॥ वि॥ सु॥ क॥ ल॥ यो॥ नू॥ ष॥ का॥ नि॥ य॥ मां॥
॥ ना॥ नि॥ के॥ ली॥ ख॥ लु॥ ॥ यि॥ य॥ ल्या॥ ॥ क॥ र॥ व॥ रू॥ लु॥ ॥ वृ॥ न॥ सा॥ क॥ र॥ व॥ द॥ री॥ प॥ ली॥ षो॥ न॥ न॥ के॥ र॥ व॥ लु॥ न॥ ग॥
गावया॥ १॥ य॥ ला॥ लु॥ के॥ ॥ नि॥ वा॥ रा॥ ॥ स्त्र॥ न॥ स्या॥ वि॥ प॥ ल॥ षा॥ न॥ के॥ म॥ र॥ ॥ द्वा॥ न॥ पु॥ द॥ य॥ सा॥ लु॥ लो॥ रु॥ न॥ य॥ नि॥
क्षि॥ प॥ नू॥ ॥ नि॥ जा॥ व॥ या॥ सा॥ जा॥ ध॥ न॥ म॥ सु॥ वि॥ या॥ उ॥ ग॥ ॥ ज॥ न॥ षां॥ का॥ र्षि॥ की॥ वू॥ लु॥ क॥ ष॥ द॥ रु॥ ष॥ जा॥ न॥ की॥ ना॥
ग॥ न॥ ना॥ ग॥ की॥ जा॥ ना॥ रु॥ लं॥ स॥ म॥ नि॥ वी॥ हे॥ म॥ ॥ द॥ त्वा॥ प॥ ल॥ य॥ री॥ को॥ द॥ नि॥ ग॥ र॥ हो॥ लु॥ नि॥ क्षा॥ य॥ य॥ ॥ पा॥ न॥ य॥ थ॥
व॥ ली॥ हि॥ का॥ द॥ मृ॥ पि॥ ल॥ य॥ र्सा॥ न॥ य॥ न॥ ॥ द॥ हा॥ शो॥ ना॥ व॥ क॥ दू॥ दि॥ पि॥ पा॥ सा॥ दा॥ हा॥ ना॥ न॥ ॥ ग॥ ल॥ द॥ र्द्यं॥ य॥ द॥ न॥

[illegible]